50

ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत

अमृता शेरगिल

सर्प वृक्ष

सिर्फ़ इतिहास दोषी नहीं
इसे रचने वाले पात्र भी
उतने ही दोषी हैं
सबने अपनी पहचान, अपने नज़रिए
और अपने पूर्वाग्रहों को प्रमुखता दी
तथ्यों को कुचला, उन्हें दबाया
उनपर मिट्टी डाली
जिन पात्रों ने आज़ादी की जंग में
अपने नाख़ून तक नहीं उतरवाए
अपनी उंगलियों पर एक भी
ख़राश नहीं आने दी
उन्हें आज़ादी का सूरमा बताया
और मान-सम्मान से नवाज़ा
जिन बांकुरों ने ख़ुशी-ख़ुशी
अपनी गर्दन उतरवाई
बसा-बसाया घर उजड़वाया
उन्हें इतिहास के पन्नों से बाहर रखा

इतिहास के रचनाकारों ने
इतिहास रचते वक़्त साधारण ग़रीब
ईमानदार पात्रों की भूमिका पर
पर्दा डाल दिया
मुख़बिरी करने वाले कुपात्रों का
क़द बढ़ा कर उन्हें सेनानी कहा

समय आने दो
इतिहास और इतिहासकारों के
असत्य का हिसाब-किताब
बराबर हो जाएगा

- 'मेघ को पानी' से

जुलाई-सितम्बर 2024

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

जुलाई-सितम्बर 2024
वर्ष 18 : अंक 50

आवरण : अमृता शेरगिल
रेखांकन : अनुप्रिया

मानद सहयोग

शहंशाह आलम
लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

मोनिश हुसेन

कार्यालय : सुनील हेम्ब्रम

संपर्क
247 एम आई जी
लोहियानगर, पटना - 800 020
e-mail : doabapatna@gmail.com
मो.-08409044236

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट
शाहगंज, पटना-800 006
मो.-09334116542

मूल्य : ₹ 225/- (डाक खर्च अलग)

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

संपादक : **जाबिर हुसेन**
मो.-09431602575

जुलाई-सितम्बर 2024

दोआबा

समय से संगत

अनुक्रम

अपनी बात : जाबिर हुसेन / 05 - 06

एकल नाटक / 08 - 23
मीरा कांत : चल मछली

आलेख / 24 - 39
शंभु गुप्त : कहानी और समय *(संदर्भ : समकाल)*

संस्मरण / 40 - 57
रामधारी सिंह दिवाकर : ज़ख़्म - औपन्यासिक जीवन की दुखांतिका
रुचि भल्ला : अकथ कथा लिंब गांव की

साक्षात्कार / 58 - 67
पिलकेन्द्र अरोरा से दीप्ति गुप्ता की बातचीत

कथा / 68 - 147
प्रेम कुमार / प्रफुल्ल प्रभाकर / रजनी शर्मा / रीना सोपम
श्यामल बिहारी महतो / राजनारायण बोहरे
मुकुल जोशी / महेश कुमार केशरी

लघुकथा / 148 - 152
पूर्णिमा सहारन / सत्य शुचि / नीरज जायसवाल

कविता समय / 153 - 210
अरुण कमल / रति सक्सेना / किरण अग्रवाल / विनय कुमार
अवध बिहारी पाठक / कविता कृष्णपल्लवी / पुरु मालव
आंशी अग्निहोत्री / मनोज मोहन / सपना भट्ट / प्रेम रंजन अनिमेष
कुमार विजय गुप्त / अनामिका 'शिव' / लालदीप
गुंजन उपाध्याय पाठक / सारिका भूषण / कस्तूरीलाल तागरा

संवाद / 211 - 256
अक्क महादेवी (सुभाष राय) / सुभाष राय
अंतिम अध्याय (रामधारी सिंह दिवाकर) / शहंशाह आलम
उजाड़ लोकतंत्र में (पूनम सिंह) / निवेदिता
लौटा हुआ लिफाफा (कुमार विजय गुप्त) / नीरज दइया
अमृता शेरगिल : पेंटिंग में कविता (डॉ. नीलम वर्मा) / सुरेन्द्र बांसल
सांप (रत्नकुमार सांभरिया) / हरिनारायण ठाकुर
छोटा-सा एक पुल (जाबिर हुसेन) / चुनन कुमारी, अश्विनी कुमार आलोक
राबिया का ख़त (मेधा) / शहंशाह आलम

दोआबा-49 (अप्रैल-जून, 2024)
शहंशाह आलम / हरिराम मीणा / भास्कर चौधुरी
श्यामल बिहारी महतो / राजेश कुमार मिश्र

□ □

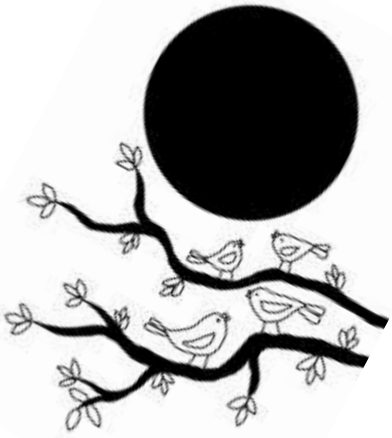

जाबिर हुसेन

दोआबा का यह अंक

अंधेरों से अपनी दोस्ती टूट गई है
जुगनुओं को खुले मन से उड़ना मना है
फूलों ने खिलना छोड़ दिया है
हवाएं अपनी मर्ज़ी से नहीं बहतीं

दोआबा के इस 50वें अंक में ख्यात चित्रकार अमृता शेरगिल के दो कला-चित्र प्रकाशित हैं। पहले और आख़िरी कवर पर साभार छपे इन चित्रों ने *दोआबा* के इस अंक का मान बढ़ाया है। डॉ. नीलम वर्मा द्वारा संपादित-प्रकाशित बड़े आकार की एक खूबसूरत पुस्तक में अमृता शेरगिल के कई खूबसूरत चित्र छपे हैं। इन नायाब चित्रों के साथ डॉ. नीलम वर्मा के प्रतिनिधि हाइकु भी प्रस्तुत हैं।

अमृता के इन कला-चित्रों ने दुनिया भर में शोहरत की ऊंचाइयां हासिल की हैं। इन में जीवन का उत्स, उसका सौंदर्य, उसकी तन्हाई, उदासी, उसका एकांत सब कुछ जीवंत हो उठता है। ये चित्र दर्शकों के मन में एक अलौकिक तेज की अनुभूति जगाते हैं। जो सारी ज़िंदगी एक ज़िंदा स्पर्श बनकर हमारी संवेदनाओं के साथ चलती हैं।

अमृता की पेंटिंग्स में जो तीक्ष्णता उभरती है, वो उन्हें दुनिया के महानतम चित्रकारों की क़तार में एक ऊंचा स्थान प्रदान करती है। *दोआबा* के इस लम्बे सफ़र में ये चित्र आपकी कला-दृष्टि को समृद्ध-संपन्न करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

□

बाहर, आंगन में, दीवार से लगी दो-चार फीट ख़ाली ज़मीन से सीमेंट की टाली हटाकर किसी ने वहां अशोक के पौधे रोप दिए हैं। अब वहां रोज़ाना, सुबह-शाम पानी के छींटे लगाये जाते हैं। आस-पास, गमलों में कई तरह के फूल-पौधे लगे हैं। एक गमले में तुलसी का पौधा उग आया है। तुलसी के पत्तों ने गमले का ऊपरी हिस्सा ढंक लिया है।

पहले, इस ख़ाली ज़मीन में झाड़ीनुमा पौधे फैले थे, जिन्होंने दीवार के बड़े हिस्से को घेर रखा था। ये झाड़ियां इतनी फैली और उलझी थीं कि सड़क पर चलनेवाली गाड़ियां भी मुश्किल से ही दिखाई देती थीं। कोई राहगीर दीवार से लगकर खड़ा हो जाए, तो उसके स्याह-सफ़ेद बालों का कुछ हिस्सा-भर दिखाई देता था।

एक दिन, किसी ने इन झाड़ियों को एक झटके में कटवा दिया। फिर तो सड़क पर चलता-फिरता आदमी भी आसानी से इन्हें दिख जाने लगा।

अशोक को पेड़ की शक्ल लेने में अभी काफ़ी समय लगने वाला है। तब तक पानी की बौछारें लगाते रहना जरूरी होगा।

□

दोआबा ने अपने नाम के साथ एक उप-नाम जोड़ रखा है : *समय से संगत।* अपने 50 अंकों के इस साहित्यिक सफ़र में हमारी कोशिश रही है कि हम नित-नई चुनौतियों और आपदाजनित परिस्थितियों का पूरी ईमानदारी, दृढ़ता और तप के साथ सामना करते हुए आगे बढ़ें। हमने समझौतों की बारिश और ख़राब मौसमों में भी अपने क़दमों को स्थिर रखा, और अपने इरादों में कोई क़मज़ोरी नहीं आने दी है। यही दरअसल हमारी पहचान बनकर पाठकों के सामने आती रही है। पाठकों ने हमारा साथ देते वक़्त इस निष्ठा और मर्यादा की शक्ति को ही अपनी पसंद का सम्मानजनक आधार बनाये रखा है।

इस अंक में हमें अधिक से अधिक रचनाकारों को स्थान देने के लिए ही इसकी पृष्ठ-संख्या बढ़ानी पड़ी है। इस कारण इस अंक की थोड़ी क़ीमत बढ़ाना हमारी मजबूरी थी। आशा है, हमारे पाठक हमारा ये भार खुशी-खुशी सह लेंगे।

□□